INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

(मुख्य परीक्षा हेतु)

Level – 2

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 3

संस्कृतम् + शिक्षण विधयः

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2 हेतु)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**राजस्थान 3rd ग्रेड (REET मुख्य परीक्षा लेवल – 2)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें/*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/ny6pbb

Online Order करें – https://shorturl.at/liVKO

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	<u>संस्कृत</u>	
1.	संज्ञाप्रकरणतः सामान्यप्रश्नाः इत् संज्ञा, संहिता, सवर्णम् उदात्तः, अनु स्वरितः, उच्चारणस्थानानि ।	1
2.	प्रत्ययप्रकरणम् - कृन्दत प्रकरणम्, तद्धित प्रकरणम्, स्त्री प्रकरणम्	9
3.	सन्धिः	12
4.	समासाः	19
5.	शब्दरूप	26
6.	धातु रूप	31
7.	अव्यय	34
8.	उपसर्ग	36
9.	कारक	38
10.	हिन्दीवाक्यानां संस्कृतानुवादः	42
11.	अशुद्धि संशोधनम्	46
12.	संस्कृतसाहित्येतिहास-सम्बन्धि-सामान्य परिचयात्मक-प्रश्ना • लौकिक साहित्यम् रामायणम्, महाभारतम् । • महाकाव्यकवयः - कालिदासः, भारविः, माघः, श्रीहर्षः • दृश्यकाव्यकवयः - भासः भवभूतिः शूद्रकः ।	51
13.	शिक्षण विधयः • संस्कृत भाषा – शिक्षण विधयः • संस्कृत भाषा – संस्कृत सिद्धांताः • संस्कृतशिक्षणाभिरुचिप्रश्नः • संस्कृत भाषा कौशालस्य विकासः (श्रवणं, संभाषणं, पठनं, लेखनं)	79

	• *संस्कृतशिक्षणे – अधिगम साधनानि, संस्कृतशिक्षणे, सम्प्रेषणस्यसाधनानि, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानि* • *संस्कृतभाषाशिक्षणस्य मूल्यांकन – सम्बंधितः प्रश्नः , मौखिक – लिखित प्रश्नानाम प्रकाराः सततमूल्यांकनम , उपचारात्मक – शिक्षणम्*	

अध्याय – 1

संज्ञाप्रकरणतः सामान्यप्रश्नाः इत् संज्ञा, संहिता, सवर्णम् उदात्तः, अनु स्वरितः, उच्चारणस्थानानि ।

व्यावहारिक सुविधा के लिए प्रत्येक व्यक्ति या पदार्थ को किसी न किसी नाम से अभिहित किया जाता है। इसी नाम को संज्ञा भी कहते हैं। व्याकरणशास्त्र में संज्ञाओं एवं परिभाषाओं का बहुत महत्त्व होता है। इनका प्रयोग लाघव के लिए किया गया है। संज्ञाओं एवं परिभाषाओं को समझने से व्याकरण-प्रक्रिया को समझने में सहायता मिलती है।

अर्थ का कुछ नाम होता है। नाम कोई पद होता है। जैसे दशरथ का पुत्र, सीता का पति, यह अर्थ है, उस का नाम राम है। इसलिए राम नाम पद होता है। उसका अर्थ होता है - दशरथ का पुत्र और सीता का पति। इसलिए राम एक पद है। दशरथ का पुत्र यह अर्थ है। इसी को पदार्थ कहते हैं। इस प्रकार के वाचक पद को संज्ञा कहते हैं। संज्ञा का अर्थ संज्ञी कहते हैं। जैसे राम पद संज्ञा है । दशरथ पुत्र संज्ञी है।

कुछ संज्ञाएँ एवं परिभाषाएँ नीचे दी जा रही हैं—

आगम

- किसी वर्ण के साथ जब दूसरा वर्ण मित्रवत् पास आकर बैठकर उससे संयुक्त हो जाता है, तब वह आगम कहलाता है (मित्रवदागमः), जैसे— वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया। यहाँ वृक्ष के 'अ' एवं छाया के 'छ' के मध्य में 'च्' का आगम हुआ है।

आदेश

- किसी वर्ण को हटाकर जब कोई दूसरा वर्ण उसके स्थान पर शत्रु की भाँति आ बैठता है तो वह आदेश कहलाता है (शत्रुवदादेशः),जैसे— यदि + अपि = यद्यपि, यहाँ 'इ' के स्थान पर 'य्' आदेश हुआ है। यह आदेश पूर्व वर्ण के स्थान पर अथवा पर वर्ण के स्थान पर हो सकता है। पूर्व तथा पर दोनों वर्णों के स्थान पर दीर्घादि रूप में 'एकादेश' भी होता है।

उपधा

- किसी शब्द के अन्तिम वर्ण से पूर्व (वर्ण) को उपधा कहते हैं, जैसे— चिन्त् में 'त्' अंतिम वर्ण है और उससे पूर्व 'न्' उपधा है (अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा)। जैसे महत् में अन्तिम वर्ण 'त्' से पूर्ववर्ती 'ह' में विद्यमान 'अ' उपधा संज्ञक है।

पद

- संज्ञा के साथ सु, औ, जस् आदि नाम पदों में आने वाले 21 प्रत्यय एवं तिप्, तस्, झि आदि क्रियापदों में आने वाले 18 प्रत्यय विभक्ति संज्ञक हैं। सु, औ, जस् (अः) आदि तथा धातुओं के साथ ति, तस् (तः) अन्ति आदि विभक्तियों के जुड़ने से सुबन्त और तिङन्त शब्दों की पद संज्ञा होती है (सुप्तिङन्तं पदम्), यथा— रामः, रामौ, रामाः तथा भवति, भवतः, भवन्ति। केवल पठ्, नम्, वद् तथा राम इत्यादि को पद नहीं कह सकते। संस्कृत भाषा में जिसकी पद संज्ञा नहीं होती उसका वाक्य में प्रयोग नहीं किया जा सकता है (अपदं न प्रयुञ्जीत)।

निष्ठा

- क्त (त) और क्तवतु (तवत्) प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं— 'क्तक्तवतू निष्ठा'। इनके योग से भूतकालिक क्रियापदों का निर्माण किया जाता है, जैसे— गतः, गतवान् आदि।

विकरण

- धातु और तिङ् प्रत्ययों के बीच में आने वाले शप् (अ) श्यन् (य) श्नु (नु), आदि प्रत्यय विकरण कहलाते हैं, यथा— भवति में भू + ति के मध्य में 'शप्' हुआ है (भू + अ + ति)। विकरण भेद से ही धातुएँ 10 विभिन्न गणों में विभक्त होती हैं।

संयोग

- संस्कृत में 'संयोग' एक महत्त्वपूर्ण संज्ञा के रूप में प्राप्त होता है। यह एक पारिभाषिक शब्द है। महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी में इसका अर्थ "हलोऽनन्तराः संयोगः" किया है। अर्थात् स्वर रहित व्यञ्जनों (हल्) के व्यवधान रहित सामीप्य भाव को संयोग कहते हैं, यथा— महत्त्व में त्, त् तथा व् का संयोग है। इसी प्रकार—
- रामः उद्यानं गच्छति। उद्यानम् में 'द्' और 'य्' तथा गच्छति में 'च्' और 'छ' का संयोग है।
- अयं रामस्य ग्रन्थः अस्ति। रामस्य में 'स्' और 'य्', ग्रन्थः में 'ग्' + 'र्' तथा 'न्' और 'थ्' तथा अस्ति में 'स्' और 'त्' का संयोग है।

संहिता

- वर्णों के अत्यन्त सामीप्य अर्थात् व्यवधान रहित सामीप्य को संहिता कहते हैं (परः सन्निकर्षः संहिता)। वर्णों की संहिता की स्थिति में ही सन्धिकार्य होते हैं, जैसे— वाक् + ईशः में 'क्' + 'ई' में संहिता (अत्यन्त समीपता) के कारण सन्धि कार्य करने से 'वागीशः' पद बना है।

सम्प्रसारण

- यण् (य्, व्, र्, ल्) के स्थान पर इक् (इ, उ, ऋ, लृ) के प्रयोग को सम्प्रसारण कहते हैं (इग्यणः सम्प्रसारणम्)। जैसे— यज्- इज् → इज्यते, वच्- उच् → उच्यते इत्यादि।

संज्ञा के प्रकार

- संज्ञा कभी लघु (कम अक्षर वाली) होती है, कभी बहुत (अधिक अक्षर वाली) होती है। जैसे वृद्धि, गुण, संहिता, प्रत्यय, प्रातिपदिक, धातु, पद, कारक, समास इत्यादि । कभी लौक व्यवहार में प्रयुक्त पद संज्ञा रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। जैसे- टि, घु, घ, भम् इत्यादि।
- कभी हम संज्ञा का निर्माण कर सकते हैं। तब उस संज्ञा को कृत्रिम संज्ञा कहते हैं। जैसे-अच् हल् अल् सुप् सुट् इत्यादि। कभी पाणिनि मुनि ने स्वयं संज्ञा को कहा। उसको अकृत्रिम

संज्ञा कहते हैं। जैसे-वृद्धि, गुण, संहिता, प्रत्यय, प्रातिपदिक आदि।

- संज्ञा अर्थ का बोधन कराती है और वह अर्थ व्यवहारिक पदार्थ होता है। यही अर्थ संज्ञा का है। इसलिए उसको अर्थ संज्ञा कहते हैं। जैसे- कर्ता, कर्म, करण आदि ।
- कभी जो संज्ञा का अर्थ होता है वह अलग होता है, वर्ण भी होता है। यहां संज्ञा शब्द है। अर्थ भी शब्द है। वह संज्ञा शब्द की है। इसलिए शब्द संज्ञा कहते हैं। जैसे वृद्धि संज्ञा है। जिस अर्थ में 'आ' 'ऐ' 'औ' वर्ण आते हैं। जैसे पद संज्ञा । तदर्थः 'रामः' 'कृष्णः' 'भवति' 'गच्छति' आदि शब्द आते हैं।
- कभी जैसा लोक व्यवहार में शब्द का अर्थ होता है वैसा ही व्याकरण में भी होता है। तब उस संज्ञा को अन्वर्थ संज्ञा कहते हैं। यहां एक लौकिक उदाहरण देखने योग्य है। किसी मनुष्य का नाम वीरेन्द्र है। यदि
- वह मनुष्य सर्वश्रेष्ठ वीर है तभी उसका नाम अन्वर्थ होता है। अन्वर्थ का तात्पर्य होता है- जैसा अर्थ वैसा नाम। व्याकरण में सर्वनाम, प्रातिपदिक, प्रत्यय, कर्ता, कारक इत्यादि अन्वर्थ संज्ञा वाले हैं।
- किसी पुरुष का नाम कुबेर है। यदि वह निर्धन है तब उसके नाम का अर्थ नहीं है। ऐसे स्थानों पर नाम अन्वर्थ नहीं है। व्याकरण में भी टि, घु, भम्, घः इत्यादि संज्ञा अन्वर्थ नहीं होती । वह संज्ञा अनन्वर्थ कहलाती है।

- **माहेश्वर सूत्र**

1.अइउण् 2 ऋलृक्, 3. ओ, 4. ऐच् 5. हयवरट् , 6. लण् 7. ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11.खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषर् 14. हल्

ये चतुर्दश (14) माहेश्वर सूत्र हैं। इन सूत्रों के अन्त में ण् क् ङ् आदि एक-एक व्यञ्जन हैं। उसका नाम 'इत्' है। इन सूत्रों का प्रयोग प्रत्याहार निर्माण के लिए किया जाता है। प्रत्याहार संक्षेप होता है।

माहेश्वर सूत्रों का वैशिष्ट्य - वर्णसमाम्नाय, चतुर्दश सूत्री ये भी माहेश्वर सूत्र के अलग नाम हैं। वर्णसमाम्नाय में आ, ई, ऊ, ॠ, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, अनुस्वार ये वर्ण, और वर्ण सदृश ध्वनि नहीं हैं।

- वर्णानां सर्वदृतः यः नैसर्गिकः क्रमः वर्तते तस्य महान् विपर्यासः अत्र परिलक्ष्यते।
- स्वरों का क्रम प्रायः ऐसे ही बताया है। व्यञ्जनों में क्रम इस प्रकार है:- हकार (ऊष्म), अन्तस्थ, वर्गपञ्चम अनुनासिक, वर्ग चतुर्थ, वर्ग तृतीय, वर्ग द्वितीय, वर्ग प्रथम, ऊष्म ।
- णकार की दो इत् संज्ञाएं होती हैं। लँण्-सूत्र में लकार से परे (बाद में) अँकार अनुनासिक होता है अतः इसकी इत् संज्ञा होती है। उस अवर्ण के साथ उच्चारित रेफ और रन्न संज्ञा होती है। अल् प्रत्याहार में सभी वर्ण होते हैं अतः अल् शब्द को वर्ण के अन्त तक गिनते हैं। अच् स्वर होते हैं और हल् व्यञ्जन यह विभाग परिलक्षित होता है।

1.2.1) प्रत्याहार निर्माण की प्रक्रिया

- प्रत्याहार निर्माण की प्रविधि नीचे दी गई है।
- अष्टाध्यायी में आचार्य पाणिनि कुछ वर्णों के समूह को प्रकट करने की इच्छा करते हैं। सामान्य उपाय तो यह है की उन वर्णों का साक्षात् उल्लेख हो। जैसे इ उ ऋ ऌ के स्थान में क्रमशः य् व् 'ल् वर्ण करने चाहिए । यदि इ उ ऋ ऌ के बाद अ इ उ ऋ ऌ ए ओ ऐ औ ये वर्ण आएं तो । इस प्रकार से करना हालांकि सम्भव है परन्तु यह कठिन प्रक्रिया है, व बड़ी है। यदि लघु उपाय सम्भव हो तो अति उत्तम है । वही उपाय प्रत्याहार है। तब इस प्रकार होता है - ये वर्णाः प्रकटनीयाः सन्ति ते संकलनीयाः । उसके बाद माहेश्वर सूत्रों में जो क्रम है उस क्रम में जोड़ते हैं। वहां जो आदि अर्थात् प्रथम वर्ण होता है वह ग्राह्य होता है। उनमें जो अन्तिम होता है, वह माहेश्वर सूत्रों में कहां है देखते हैं। उसके बाद जो इत् संज्ञक वर्ण होता है वह ग्राह्य होता है । इस प्रकार आदि वर्ण के साथ इत् संज्ञक के मेल से प्रत्याहार बनता है।

उदाहरण

- जैसे- ऋ ऌ इ उ इन वर्णों की इच्छा करता हूँ। तब इनको माहेश्वर सूत्र क्रम में लिखता हूँ जैसे इ उ ऋ ऌ । अब इनमें प्रथम वर्ण 'इ' है। अन्तिम वर्ण 'ल' है। माहेश्वर सूत्रों में उसके पश्चात् इत्-संज्ञक वर्ण 'क्' है। अब प्रथम वर्ण 'इ' के साथ इत्-संज्ञक 'क्' का मेल करता हूँ, तब 'इक्' यह शब्द होता है। यह 'इक्' प्रत्याहार बनता है। प्रत्याहार एक संज्ञा होती है। 'इक्' प्रत्याहार का अर्थ इ उ ऋ ऌ ये चार वर्ण होता है।
- इस प्रकार र् ल् व् य् इन वर्णों का संक्षेप में प्रकटन सम्भव होता है। इनका माहेश्वर सूत्रों में जो क्रम है उस क्रम में इस प्रकार लिखते हैं - य् व् र् ल्। उनमें आदि वर्ण 'य्' है। उनमें अन्तिम वर्ण 'ल्' है। माहेश्वर सूत्रों में उसके पश्चात् इत्संज्ञक वर्ण 'ण्' है। 'य्' इसका 'ण्' के साथ मेल करने पर 'यण्' यह प्राप्त होता है । 'यण्' प्रत्याहार है। अतः यह 'यण्' संज्ञा है। इसके संज्ञि य् व् र् ल् ये वर्ण हैं। यण् इस शब्द में य वर्ण के बाद अ वर्ण जोड़ते (य् +'अ'+ण्)। तब यण् का उच्चारण सुकर होता है।
- माहेश्वर सूत्रों में अन्तिम वर्ण का क्या उपयोग है - चतुर्दश सूत्रों में अन्तिम वर्ण इत् संज्ञक होता है, इसका उपयोग केवल प्रत्याहार के निर्माण के लिए होता है। परन्तु इसकी संज्ञि में गणना नहीं होती। जैसे यण् यह प्रत्याहार संज्ञा है। इसके संज्ञि य् व् र् ल् ये वर्ण हैं। इनमें ट् नहीं है, ण् नहीं है। यण् प्रत्याहार की जब गणना करते हैं तो हयवरट्, लण् इन दो सूत्रों का ग्रहण करते हैं। वहां हयवरट् सूत्र का अन्तिम वर्ण ट् है। इसको संज्ञि में नहीं गिनते । जैसे- लोग गिलास से जल पीते हैं परन्तु गिलास को नहीं पीते। गिलास का उपयोग जल को धारण करने के लिए है पीने के लिए नहीं। उसी प्रकार इत् संज्ञक का उपयोग प्रत्याहार के निर्माण के लिए होता है, संज्ञि के साथ व्यवहार के लिए नहीं।
- इस प्रकार अनेक प्रत्याहार हो सकते हैं। जैसे अच् प्रत्याहार के सभी स्वर संज्ञि होते हैं। हल् प्रत्याहार के सभी व्यञ्जन

- अ आ अ३ इ ई इ३ उ ऊ उ३ ऋ ऋ३ ल ल३ ए ए३ ऐ ऐ३ ओ ओ३ औ औ३ (22)
- क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म (25)
- य यँ र ल लँ व वँ श ष स ह (11)

ळ, अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय, उपध्मानीय (5) 22+25+11+5=63 वर्णों का सविस्तार परिचय नीचे दिया गया है ।

स्वराः

- अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ल ए ऐ ओ औ (अं अः अनुस्वार और विसर्ग)
- वर्गे स्पर्श वर्ण कु-कवर्ग चु-चवर्ग टु-टवर्ग तु-तवर्ग पु-पवर्ग प्रथम अल्प प्राण अ क च ट त - द्वितीय तृतीय चतुर्थ पञ्चम उच्चारण अन्तःस्थः ऊष्मा स्थानम् महा प्राण ख छ ठ थ फ अल्प प्राण ग ज ड
- द ब महा प्राण घ र झ ढ ध प अन्तःस्थ वर्ण य र ल व (यणोऽन्तःस्थाः ।) भ अल्प प्राण ङ ञ ण न म कण्ठ तालु मूर्धा दन्ता ओष्ठौ य र ल ह, विसर्ग श ष स
- ऊष्म वर्ण श ष स ह (शल ऊष्माणः ।)

वस्तुतः संस्कृत में निम्न 63 वर्ण हैं।

वर्णमाला का वैशिष्ट्य - संस्कृत वर्णमाला अत्यन्त सुचिन्तित एवं वैज्ञानिक है। उसके अनेक वैशिष्ट्य हैं उनमें से कुछ नीचे दिए गए हैं।

पहले स्वर हैं, उसके पश्चात् व्यञ्जन हैं। स्वर और व्यञ्जन मिश्रित नहीं हैं।

- स्वरों में शुद्ध स्वर हैं (अ आ अ ३ इ ई इ३ उ ऊ उ३ ऋ ॠ ऋ३ ल ओ ओ३ औ और ये जन्य (स्वरों से उत्पन्न) स्वर बाद में हैं। अ +इ=ए, अ + ओ औ इस प्रकार से ये स्वर बनते हैं। ल३) | ए ए३ ऐ ऐ३ अ+ए ऐ, अ+उ =ओ,
- व्यञ्जनों को लिखने में तो अत्यन्त सूक्ष्मता है। 25 स्पर्श व्यञ्जन पहले हैं। उसके पश्चात् 7 अन्तःस्थ व्यञ्जन हैं। अन्त में 4 ऊष्म व्यञ्जन हैं।
- स्पर्श व्यञ्जन हि वर्गीय व्यञ्जन कहलाते हैं। उनके 5 वर्ग हैं। जिनके उच्चारण स्थान समान हैं। उन 5 स्पर्श व्यञ्जनों को एक जगह स्थापित किया गया हैं। जैसे- जिनका उच्चारण स्थान कण्ठ हैं- क ख ग घ ङ इन 5 स्पर्श व्यञ्जनों को एक जगह स्थापित किया गया हैं। इस समुदाय का नाम कवर्ग है। इसी प्रकार चवर्ग- च छ ज झ ञ का उच्चारण स्थान तालु है। टवर्ग- ट ठ ड ढ ण का उच्चारण स्थानम मूर्धा है। तवर्ग- त थ द ध न का उच्चारण स्थान दन्त है। पव र्गप फ ब भ म का उच्चारण स्थान ओष्ठ है।
- प्रत्येक वर्ग में प्रथम व्यञ्जन अल्पप्राण, द्वितीय महाप्राण, तृतीय अल्पप्राण, चतुर्थ महाप्राण, पञ्चम अल्पप्राण होता है।
- पांचों वर्गों में अन्तिम वर्ण अनुनासिक है। जैसे- ङ ञ ण न म।

प्रत्येक वर्ग में पहले 2 व्यञ्जन कठोर उच्चारित होते हैं। अन्तिम 3 व्यञ्जन मृदु उच्चारित होते हैं। क ख ये कठोर हैं। ग घ ङ ये मृदू हैं। इसी प्रकार सभी वर्गों में है।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रों के आधार पर विभिन्न प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है। प्रत्याहार दो वर्णों से बनता है, जैसे– अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारों में आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णों की गणना की जाती है। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता है, किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड़ दिया जाता है। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं–

यथा– अच् = अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ – यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया है तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड़ दिया गया है।

(क) हल् (पाँचवें सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह्, य्, व्, र्, ल्, ञ्, म्, ङ्, ण्, न्, झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष् तथा स्।

(ख) इक् (प्रथम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'इ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा लृ।

(ग) अक् (प्रथम सूत्र के प्रथम वर्ण 'अ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण 'क्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा लृ।

(घ) झल् (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर चौदहवें सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ्, भ्, घ्, ढ्, ध्, ज्, ब्, ग्, ड्, द्, ख्, फ्, छ्, ठ्, थ्, च्, ट्, त्, क्, प्, श्, ष्, स् तथा ह्।

(ङ) यण् (पञ्चम सूत्र के द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य्, व्, र् तथा ल्।

सन्धि आदि के नियमों को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं– स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (अच्)– जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं ।

स्वर के तीन भेद होते हैं– ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

1. ह्रस्व स्वर– जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा का समय लगे, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में पाँच हैं– अ, इ, उ, ऋ तथा लृ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर–** जिस स्वर के उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं । इनकी संख्या आठ है– आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'लृ' ध्वनि का

दीर्घ रूप 'ॡ' केवल वेदों में प्राप्त होता है। अन्तिम चार वर्णों को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं, क्योंकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरों के मेल से बने हैं।

उदाहरण –

अ+इ=ए अ+ए=ऐ अ+उ=ओ अ+ओ=औ

3. **प्लुत स्वर–** जिस स्वर के उच्चारण में तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हैं तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि में प्लुत स्वर को '३' की संख्या से दिखाया जाता हैं, उदाहरण के लिए एहि कृष्ण३ अत्र गौश्चरति। 'ओ३म्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

सभी ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण अनुनासिक एवं निरनुनासिक भेद से द्विविध हैं।

अनुनासिक– जिस स्वर के उच्चारण में मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती है, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं।

यथा– अँ, एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निरनुनासिक– जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है, वह निरनुनासिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर वर्णों की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हें व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह्न (्) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिका में दर्शाए गए हैं–

उदाहरण –

कु = क् ख् ग् घ् ङ् - क वर्ग

चु = च् छ् ज् झ् ञ्- च वर्ग

टु = ट् ठ् ड् ढ् ण् - ट वर्ग

तु = त् थ् द् ध् न् - त वर्ग

पु = प् फ् ब् भ् म् - प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय में इन पाँच वर्गों को कु, चु, टु, तु, पु नाम से जाना जाता है।

य् र् ल् व् (अन्तःस्थ)

श् ष् स् ह् (ऊष्म)

1. **स्पर्श–** उपर्युक्त 'क्' से 'म्' तक के 25 वर्णों को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती है। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण– ङ्, ञ्, ण्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता है, क्योंकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता है।

2. **अन्तःस्थ–** य्, र्, ल् और व् वर्णों को अन्तःस्थ कहते हैं। इन्हें अर्धस्वर भी कहते हैं।

3. **ऊष्म–** श्, ष्, स्, ह् वर्णों को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वार

इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता है। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता है।

यथा– अहम् - अहं। सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले अनुस्वार

(ं) में परिवर्तित होता है।

1. **विसर्ग (ः)–** इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह्' के सदृश किया जाता है; इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता है।

यथा– रामः, देवः, गुरुः।

2. **संयुक्त व्यञ्जन–** दो व्यञ्जनों के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरण–

i) क् + ष् = क्ष्

ii) त् + र् = त्र्

iii) ज् + ञ् = ज्ञ्

- **वर्ण**

- वर्ण दो प्रकार के होते हैं – (1) स्वर (2) व्यंजन

स्वर :- स्वरों की सं. 9 मानी गई हैं।

→ अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ
→ इन्हें (अच्) कहते हैं।
→ मूल स्वर – 5 (अ, इ, उ, ऋ, लृ)
→ संयुक्त स्वर – 4 (ए, ऐ, ओ, औ)

स्वरों के भेद

ह्रस्व स्वर (एक मात्रा)	दीर्घ स्वर (दो मात्रा)	प्लुप्त स्वर (दो से अधिक - तीन मात्रा)
अ, इ, उ, ऋ, लृ	आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ओ,	5 (श) ऐ, औ

व्यंजन :- व्यंजनों की सं. (33) मानी गई हैं।

→ 10 माहेश्वर सूत्र के अन्तर्गत् (हयवरट् से हल् तक)
→ इन्हें (हल्) कहते हैं।

- **व्यंजन के भेद .**

स्पर्श व्यंजन
(क से म) तक के
कुल - 25 वर्ण
वर्ग - 5

अन्तः स्थ व्यंजन
यण् = य, व, र, ल
प्रत्याहार

ऊष्म व्यंजन
शल् - श, ष, स,
प्रत्या. ह

संयुक्त व्यंजन
क + ष् = क्ष
त् + र् = त्र

(1) कवर्ग (4) तवर्ग (2) चवर्ग (5) पवर्ग (3) टवर्ग

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड़े से निकली निःश्वास वायु इन स्थानों का स्पर्श करती है। कुछ वर्णों का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्रिम तालिका से समझा जा सकता है—

उच्चारण स्थान

उच्चारित वर्ण सूत्र	उच्चारण स्थान	उच्चारित वर्ण
अकुहविर्सजनीयानां कण्ठः	कण्ठ	अ, आ, कवर्ग, ह, विसर्ग
इचुयशानां तालुः	तालु	इ, ई, य, चवर्ग, श्
ऋतुरषानां मूर्द्धः	मूर्द्ध	ऋ, ट वर्ग, र, ष्
लृतुलसानां दन्ताः	दन्त	लृ, तवर्ग, ल, स्
उपूपध्मानीयानां ओष्ठै	ओष्ठ	उ, ऊ, पवर्ग, उपध्मानी
ञमङ्णनानां नासिका	नसिका	ञ्. म्. ङ्, ण्. (अनुनासिक वर्ण)
एदैतोः कण्ठतालु	कण्ठ - तालु	ए, ऐ
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्	कण्ठ - ओष्ठ	ओ, औ
वकारस्य दंतोष्ठम्	दंत - ओष्ठ	वः
जिह्वामूलीस्य जिह्वामूलम्	जिह्वामूलम्	ᳵ क, ᳵ ख

अयोगवाह :- 4 होते हैं।
(1) अनुस्वार
(2) विसर्ग
अं, अः

(3) जिह्वामूलीय ᳵ क ᳵ ख = विसर्ग के समान लिखते हैं।
(4) उपध्मानीय ᳶ प, ᳶ फ = आधे विसर्ग में लिखते हैं।

- **वर्णों का प्रयत्न** :- वर्णों के उच्चारण करने की चेष्टा को कहते हैं। (2 प्रका के होते हैं।)

(A) आभ्यन्तर प्रयत्न :- जिन वर्णों का उच्चारण भीतरी प्रयत्न से हो
→ 5 प्रकार के होते हैं।

(1) स्पृष्ट - स्पर्श व्यंजन (क, म तक के वर्ण)
(2) ईषत् स्पृष्ट - अन्तः स्पर्श
(3) विवृत् - अच् (स्वर)
(4) ईषत् विवृत् - ऊष्म व्यंजन

(सवृत्) - अ

(B) बाह्य प्रयत्न :- मुख से वर्ण बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं।
→ 11 प्रकार के होते हैं।

(1) विवार
(2) श्वास
(3) अघोष
खर् प्रत्याहार (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, श, ष, स)

(4) संवाद
(5) नाद
(6) घोष
हंश् प्रत्याहार (ग, घ, ङ, ज झ ञ, ड ढ ण, द ध न, ब भ म, य व र ल)

(7) अल्पप्राण - वर्ग का 1, 3, 5 / यण् (य, व, र, ल)
(8) महाप्राण - वर्ग का 4,5 / शल् (श, ष, स, ह)
(9) उदात्त
(10) अनुदात्त
(11) स्वरित
स्वर के अन्तर्गत्

- ह - संवार, नाद, घोष, महाप्राण (इसी तरह बाकी के वर्ण निकाले जाते)
- य - संवार नाद घोष अल्पप्राण
- वर्ण - वियोजन को कहते हैं - वर्ण - विन्यास

(a) (विसर्ग (:) + क् / त् = स्)
Ex.= नमः + कार = नमस्कार
नमः + ते = नमस्ते

(b) (विसर्ग (:) + च / छ = श्)
Ex. = निः + चल = निश्चल
निः + छल = निश्छल
कः + चित् = कश्चित्

(c) (विसर्ग (:) + क, ख / ट,ठ / प,फ = ष्)
Ex. = धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
निः + प्राण = निष्प्राण
रामः + टीकते = रामष्टीकते

(2) **रूत्व सन्धि :-**

(a) ससजुषोरुः :- पूर्व पद + परवर्ण = आदेश
(अ/आ) को छोड़कर + स्वर/ = तो (र्) होता
अन्य स्वर आना/ वर्ग का 1,2,3 हो
विसर्ग (:)
Ex. = निः + बल = निर्बलः [यदि विसर्ग का मेल व्यंजन से हो, तो
दुः + बल = दुर्बलः आधा (र्) बनता हैं।]
निः + उत्तर = निरुत्तरः [यदि विसर्ग का मेल स्वर से हो
पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा तो पूरा (र) बनता हैं।

(3) **उत्व सन्धि :-**

(a) **अतो रोर प्लुतादप्लुते :-**
पूर्वपद + परवर्ण = आदेश
विसर्ग से पहले + (अत्) हो, तो (र) के स्थान पर (उ) हो जाता।
(ओ) होना
Ex. = रामः + अवदत् = रामोऽवदत्
शिवउ + अवदत् = शिवोऽवदत्

(b) रोरि :- र् के बाद र् आये तो पूर्व (र्) का लोप।
Ex. = पुनर + रमते = पुनरमते
हरिर् + रमते = हरिरमते

(c) हशि च :- (हश् प्रत्याहार = वर्ग का 2, 3, 4, 5 वर्ण + य र ल व ह)
पूर्वपद + परावण = आदेश
विसर्ग से पहले + हश् = ओ हो जाता हैं।
'अ' हो प्रत्याहार
Ex. = रजः + गुण = रजोगुणः
तपः + बल = तपोबलः
मनः + हर = मनोहरः

अध्याय – 5

समास

समास का अर्थ होता – संक्षिप्त

- समास विग्रह के विकार
लौकिक (इस लोक में प्रचलित)
अलौकिक (इस लोक में कम प्रचलित)

➢ समासः – सम् √अस् + घञ् = समासः
➢ 'अनेकपदानाम् एकपदीभवनं समासः' अर्थात् अनेकपदों का एकपद हो जाना 'समास' कहलाता हैं।
➢ **'समसनं समासः'** अर्थात् संक्षेपीकरण को समास कहते हैं। 'समास' का अर्थ हैं – संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं, तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं, और बना हुआ शब्द 'समास' कहलाता हैं।

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते।।
अर्थात् जहाँ विभक्तियों का लोप हो जाता हैं, परन्तु उनका अर्थ प्रतीत होता रहता हैं, और अनेक पद मिलकर एकपद बन जाता हैं, इसे 'समास' कहते हैं।
पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः

➢ **विग्रह- "वृत्त्यर्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः"** समासवृत्ति के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य होता हैं, उसे 'विग्रह' कहते हैं।
जैसे – 'पीताम्बरः' इस सामासिक पद का अर्थ बताने के लिए "पीतम् अम्बरं यस्य सः" यह जो वाक्य हैं यही विग्रह कहा जाता हैं।

समास विग्रह – विग्रह दो प्रकार का होता हैं –
(i) लौकिक विग्रह (ii) अलौकिक विग्रह

(i) **लौकिक विग्रह** – लोक के समझने लायक विग्रह को 'लौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे – 'दशरथपुत्रः' इस सामाजिक पद का लौकिक विग्रह होगा – दशरथस्य पुत्रः।

(ii) **अलौकिक विग्रह** – जो व्याकरणशास्त्रा की प्रक्रिया दर्शाने हेतु अर्थात् शास्त्रीय प्रक्रिया के लिए विग्रह होता हैं, उसे 'अलौकिक विग्रह' कहते हैं।
जैसे – 'दशरथ ङस् पुत्र सु' यह "दशरथपुत्रः" इस सामासिक पद का अलौकिक विग्रह होगा।

समस्त पद या सामासिक पद – समास होने पर जो शब्द बनता हैं, उसे 'समस्तपद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। जैसे – अधिगोपम्, चन्द्रशेखरः, त्रिभुवनम्, रामकृष्णौ आदि ये समस्तपद या सामासिक पद कहें जायेंगे।

- **समास के प्रकार :-**

संस्कृत में समास 5 प्रकार के होते हैं: -

(1) केवल समास
(2) अव्ययीभाव समास
(3) तत्पुरुष समास — कर्मधारय, द्विगु
(4) बहुब्रीहि समास
(5) द्वन्द्व समास

(1) **केवल समास :-** विशेष संज्ञा रहित समास को कहते हैं।

– इस समास का लौकिक/अलौकिक विग्रह सर्वाधिक पूछते हैं।

लौकिक वि.		अलौकिक वि.
Ex. = भूतपूर्वः		पूर्वम् भूत पूर्व अम् भूत सू
वागर्थविव	=	वागर्थौ इव
अधमर्णः	=	अधम् ऋण
उत्त मर्णः	=	उत्तम् ऋण
नैकः	=	न एकः

(2) **अव्ययीभाव समास :-**

पूर्वपद प्रधानः अव्ययीभावः

- हमेशा नपुंसकलिङ्ग में होता हैं।
- पहला पद प्रधान होता हैं।
- पहचान के लिए :- आगे उपसर्ग लगा रहता हैं।

Ex. = यथाशक्ति – शक्ति अनतिक्रम्य
उपनगरम् – गंङ्गया समीपम्
प्रतिदिनम् – दिनं दिनं प्रति

- जब संख्यावाची का संबंध वंशवाची से हो तो :- द्विमुनि = द्वि और मुनि औ
- नदीभिश्च – नदी का नाम संख्या के साथ हो तो = पंञ्चगंङ्गम् = पंचानां गंगानाम् समाहारः

अव्ययीभाव समास के उदाहरण –

1. **'विभक्ति'** के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त (पद) के साथ अव्ययीभाव समास होता हैं जैसे –

समास विग्रह	समस्त पद (अर्थ सहित)
हरौ इति	**अधिहरि** (हरि में)
आत्मनि इति	**अध्यात्मम्** (आत्मा में)
गोपि इति	**अधिगोपम्** (गोप में)

यहाँ 'अधि' अव्य सप्तमी विभक्ति के अर्थ में हैं।

2. **'समीप'** अर्थ में विद्यमान 'उप' आदि अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता हैं।

3. **जैसे-**

समास विग्रह	सामासिक पद (अर्थ सहित)
गङ्गयाः समीपम्	**उपगङ्गम्** (गङ्गा नदी के समीप)
नगरस्य समीपम्	उपनगरम् (नगर के समीप)
कृष्णस्य समीपम्	उपकृष्णम् (कृष्ण की समीप)
कूलस्य समीपम्	**उपकूलम** (किनारे के समीप)
तटस्य समीपम्	**उपतटम्** (तट के समीप)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'उप' यह अव्यय समीप अर्थ में हैं। जिसका गङ्गा आदि समर्थ सुबन्त पदों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ हैं। समास होने के बाद उपङ्गम्, उपनगरम् आदि पूरा पद अव्यय हो जाता हैं।

4. **'समृद्धि'** के अर्थ में अव्ययीभाव समास होता हैं। **जैसे –**

समास विग्रह	समस्त पद (अर्थसहित)
मद्राणां समृद्धिः	**सुमद्रम्**(मद्रदेशवासियों की समृद्धि
भिक्षाणां समृद्धिः	**सुभिक्षम्** (भिक्षाटन की समृद्धि

5. **व्यृद्धि** (दुर्गति या वृद्धि का अभाव) के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता हैं
जैसे –

यवनानां व्यृद्धिः = **दुर्यवनम्** (यवनों की दुर्गति)
भिक्षाणां व्यृद्धिः = **दुर्भिक्षम्** (भिक्षा का न मिलना)
शकानां व्यृद्धि = **दुःशकम्** (शकों की दुर्गति)
राक्षसाणां व्यृद्धिः = **दुर्राक्षसम्** (राक्षसों की अवनति)

6. **'अर्थाभाव'** के अर्थ में विद्यमान अव्यय पदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता हैं। जैसे-

मक्षिकाणाम् अभावः = **निर्मक्षिकम्** (मक्खियों का अभाव)
प्राणानाम् अभावः = **निष्प्राणम्** (प्राणों का अभाव)
विघ्नानाम् अभावः = **निर्विघ्नम्** (विघ्नों का अभाव)
मशकानाम् अभावः = **निर्मशकम्** (मच्छरों का अभाव)
जनानाम् अभावः = **निर्जनम्** (मनुष्यों का अभाव)
दोषाणाम् अभावः = **निर्दोषम्** (दोषों का अभाव)

उपर्युक्त उदाहरणों में 'निर्' आदि अव्ययपदों का 'मक्षिका' आदि समर्थ सुबन्तों के साथ अव्ययीभाव समास हुआ हैं। यहाँ 'निर्' अव्यय का अर्थ हैं – अर्थाभाव।

7. **अत्यय** (ध्वंस या नाश) के अर्थ में विद्यमान अव्ययपदों का समर्थ सुबन्त के साथ अव्ययीभाव समास होता हैं। जैसे –

हिमस्य अत्ययः = **अतिहिमम्** (हिम का नाश)
रोगस्य अत्ययः = **अतिरोगम्** (रोग का नाश)
शीतस्य अत्ययः = **अतिशीलम्** (शीतलता का नाश)

पञ्चानाम् अमृतानां समाहारः = **पञ्चामृतम्** (पाँच अमृतों का समूह)
पञ्चानां दिनानां समाहारः = **पञ्चदिनम्** (पाँच दिनों का समूह)
त्रयाणां लोकानां समाहारः = **त्रिलोकी** (तीन लोकों का समाहार)
त्रयाणां भुवनानां समाहारः = **त्रिभुवनम्** (तीनों भुवनों का समाहार)
चतुर्णां फलानां समाहारः = **चतुर्फलम्** (चार फलों का समाहार)
अष्टनाम् अध्यायानां समाहारः= **अष्टाध्यायी** (आठ अध्यायों का समाहार)
त्रयाणां फलानां समाहारः = **त्रिफला** (तीन फलों का समाहार)
शतानाम् अब्दानां समाहारः = **शताब्दी** (सौ वर्षो का समूह)
चतुर्णां भुजानां समाहारः = **चतुर्भुजम्** (चार भुजाओं का समूह)

(4) द्वन्द्व समास :- उभयपद प्रधानो द्वन्द्व (दोनों पद प्रधान)

- विग्रह करते वक्त प्रत्येक शब्द के बाद "च" लगाते हैं।
- शब्द विपरीथतिक होते हैं।
- इसके तीन भेद हैं :-

(a) **इतरेतर द्वन्द्व :-** दोनो पद अपनी-अपनी प्रधानता रखते

Ex. = स्त्रीपुरूषौ = स्त्री च पुरूषः च
गंगायमुने = गंगा च यमुना च

इतरेतर द्वन्द्व समास के उदाहरण

सीता च रामश्च =**सीतारामौ** (सीता और राम)
रामः च कृष्णः च = **रामकृष्णौ** (राम और कृष्ण)
देवश्च असुरश्च =**देवासुरौ** (देवता और असुर)
धर्मश्च अर्थश्च =**धर्मार्थौ** (धर्म और अर्थ)
कृष्णश्च अर्जुनश्च =**कृष्णार्जुनौ** (कृष्ण और अर्जुन)
वाणी च विनायकश्च = **वाणीविनायकौ** (वाणी और विनायक)

(b) **समाहार द्वन्द्व :-** अनेक पदों के होने से एक समुदाय का बोध होता हैं, ये सदैव नपुंसकलिंग एकवचन में रहता।

Ex. = हस्तपादम् = हस्तौ च पादौ च
रथाश्वम् = रथश्च अश्वाश्च

समाहार द्वन्द्व के उदाहरण

समास विग्रह सामासिकपद (अर्थसहित)
पाणी च पादौ च तेषां समाहार = **पाणिपादम्** (हाथ और पैर का समूह)
रथिकः च अश्वारोही च = **रथिकाश्वारोहम्** (रथी और घुड़सवार)
भेरी च पटहश्च =**भरीपटहम्** (भेरी और पटह का समूह)
अहिश्च नकुलश्च =**अहिनकुलम्** (साँप और नेवला)

(c) **एकशेष द्वन्द्व :-** दो या दो से अधिक पदों को केवल एक शब्द द्वारा प्रकट किया जाए।

Ex. = पितरौ =माता च पिता च
अजौ =अजा च अजः च

एकशेष द्वन्द्व समास के उदाहरण

समास विग्रह सामासिक पद (अर्थ सहित)
माता च पिता च = **पितरौ** (माता और पिता)
पुत्रश्च पुत्री च = **पुत्रौ** (पुत्र और पुत्री)
रामश्च रामश्च = **रामौ** (दो राम)
हंसश्च हंसी च = **हंसौ** (हंस और हंसी)

(5) बहुब्रीहि समास :- कोई पद प्रधान नहीं होता, अपितु अन्य अर्थ बताता हैं।
(अनेकमन्यैपदार्थे)

बहुब्रीहि के 4 भेद हैं -

(a) **समानाधिकरण :-** दोनों पदों में समान विभक्ति हो, दोनों पद विशेषण का कार्य करें।

Ex. = दशाननः =दशानि अनानि यस्यसः
पीताम्बरः =पीतम् अम्बरं यस्यसः

समास विग्रह **सामासिक पद** (अर्थ सहित)
पीतम् अम्बरं यस्य सः =**पीताम्बरः** (श्रीकृष्ण) पीले वस्त्र वाला
लम्बम् उदरं यस्य सः =**लम्बोदरः** (गणेश) लम्बा हैं उदर जिसका
नीलं कण्ठं यस्य सः =**नीलकण्ठः** (शिव) नीला है कण्ठ जिसका
श्वेतम् अम्बरं यस्य सः = **श्वेताम्बरः** (साधु) सफेद है वस्त्र जिसका
दामम् उदरं यस्य सः = **दामोदरः** (श्रीकृष्ण) रस्सी है उदर पर जिसके
जितानि इन्द्रियाणि येन सः =**जितन्द्रियः** (मुनि) जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा = **शुक्लाम्बरा** (सरस्वती)
दश आननानि यस्य सः = **दशाननः** (रावण)
चत्वारि आननानि यस्य सः =**चतुराननः** (ब्रह्म)
दिक् अम्बरं यस्य सः = **दिगम्बरः** (शिव)

- साधु, असाधु, फलवाचक शब्द से अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति का जैसे प्रयोग होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
दुर्जनाय असाधु व्यवहरति।	दुर्जने असाधु व्यवहरति।
शिष्याय साधु व्यवहरति।	शिष्ये साधु व्यवहरति।
दन्ताभ्यां कुञ्जर हन्ति।	दन्तयोः कुञ्जरं हन्ति।

- जाति, गुण, क्रिया तथा संज्ञा की विशेषता बताने में विशेष्य में तथा तमप् प्रत्यय के योग में सप्तमी या षष्ठी विभक्ति होती है।

अशुद्ध	शुद्ध
कविभिः कालिदासः श्रेष्ठः।	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
पशुभ्यः गौः।	पशुषु गौः।
वालकेभ्यः मोहनः चतुरतमः।	बालकेषु मोहनः चतुरतमः।
हिमालय पर्वतेभ्यः उच्चतमः।	हिमालयः पर्वतेषु उच्चतमः।

स्निह, अभिलए, युज्,आदरसूचक, आसक्ति अर्थवाली धातुओं के योग में तथा विश्वास, व्यवहार, अर्थवाली धातुओं के योग में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
माता बालकं स्निह्यति।	माता बालके स्निह्यति।
कृष्णस्य धनाय अभिलाषः।	कृष्णस्य धने अभिलाषः।
स कृष्णस्य विश्वसिति।	स कृष्णे विश्वसिति।

क्षिप्, मुच्, अस्, पत् धातुओं के योग में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे -

अशुद्ध	शुद्ध
मृगस्य बाणं क्षिपति।	मृगे बाणं क्षिपति।
कूपं अन्धः पतति।	कूपे अन्धः पतति।
माता गृहम् अस्ति।	माता गृहे अस्ति।

लग्न, व्यग्र, अल्पर, कुशल, निपुण, प्रवीण, दक्ष, चतुर आदि शब्दों के योग में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अशुद्ध	शुद्ध
बालकः पठनस्य कुशलः।	बालक : पठने कुशलः।
सुरेशः कार्येण संलग्नः।	सुरेशः कार्ये: संलग्नः।
महेशः गायने दक्षः।	महेशः गायनात् दक्षः।
रमा चित्रकलया निपुणः।	रमा चित्रकलायां निपुणा।
सुरभिः गृहकार्यस्य चतुरा।	सुरभिः गृहकार्ये चतुरा।

अध्याय - 12

1. संस्कृतसाहित्येतिहास-सम्बन्धि - सामान्य परिचयात्मक

व्याकरण

व्याकरण परिचय

- वेदाङ्ग (वेद के अंग) छः हैं, जिसमें से व्याकरण एक है। संस्कृत भाषा को शुद्ध रूप में जानने के लिए व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया जाता है। अपनी इस विशेषता के कारण ही यह वेद का सर्वप्रमुख अंग माना जाता है। इसके मूलतः पाँच प्रयोजन हैं - रक्षा, ऊह, आगम, लघु और असंदेह ।
- व्याकरण की जड़ें वैदिकयुगीन भारत तक जाती हैं। व्याकरण की परिपाटी अत्यन्त समृद्ध है ।
- जिसमें पाणिनि का अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ भी शामिल है। 'व्याकरण' से मात्र 'ग्रामर' का अभिप्राय नहीं होता बल्कि यह भाषा विज्ञान के अधिक निकट है। साथ ही इसका दार्शनिक पक्ष भी है।
- संस्कृत व्याकरण वैदिक काल में ही स्वतंत्र विषय बन चुका था। नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात - ये चार आधारभूत तथ्य यास्क (ई. पू. लगभग 700) के पूर्व ही व्याकरण में स्थान पा चुके थे। पाणिनि (ई. पू. लगभग 550) के पहले कई व्याकरण लिखे जा चुके थे जिनमें केवल आपिशलि और काशकृत्स्न के कुछ सूत्र आज उपलब्ध हैं। किंतु संस्कृत व्याकरण का क्रमबद्ध इतिहास पाणिनि से आरंभ होता है।
- पाणिनि ने वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत दोनों के लिए "अष्टाध्यायी" की रचना की। अपने लगभग चार हजार सूत्रों में उन्होंने सदा के लिए संस्कृत भाषा को परिनिष्ठित कर दिया। उनके प्रत्याहार, अनुबन्ध आदि गणित के नियमों की तरह सूक्ष्म और वैज्ञानिक हैं। उनके सूत्रों में व्याकरण और भाषाशास्त्र सम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश है।
- कात्यायन (ई. पू. लगभग 300) ने पाणिनि के सूत्रों पर लगभग 4295 वार्तिक लिखे। पाणिनि की तरह उनका भी ज्ञान व्यापक था। उन्होंने लोकजीवन के अनेक शब्दों का संस्कृत में समावेश किया और न्यायों तथा परिभाषाओं द्वारा व्याकरण का विचारक्षेत्र विस्तृत किया। कात्यायन के वार्तिकों पर पतंजलि (ई. पू. 150) ने महाभाष्य की रचना की। महाभाष्य आकर-ग्रंथ है। इसमें प्रायः सभी दार्शनिक वादों के बीज हैं। इसकी शैली अनुपम है। इसपर अनेक

टीकाएँ मिलती हैं जिनमें भर्तृहरि की "त्रिपादी", कैयट का "प्रदीप" और शेषनारायण का "सूक्तिरत्नाकर" प्रसिद्ध हैं। सूत्रों के अर्थ, उदाहरण आदि समझाने के लिए कई वृत्तिग्रंथ लिखे गए थे जिनमें काशिकावृत्ति (छठी शताब्दी) महत्वपूर्ण है। जयादित्य और वामन नाम के आचार्यों की यह रमणीय कृति है। इसपर जिनेन्द्रबुद्धि (लगभग 650 ई.) की काशिकाविवरणपंजिका (न्यास) और हरदत्त (ई. 1200) की पदमंजरी उत्तम टीकाएँ हैं। काशिका की पद्धति पर लिखे गए ग्रंथों में भागवृत्ति (अनुपलब्ध), पुरुषोत्तमदेव (ग्यारहवीं शताब्दी) की भाषावृत्ति और भट्टोजि दीक्षित (ई. 1600) का शब्दकौस्तुभ मुख्य हैं।

- पाणिनि के सूत्रों के क्रम बदलकर कुछ प्रक्रियाग्रंथ भी लिखे गए जिनमें धर्मकीर्ति (ग्यारहवीं शताब्दी) का रूपावतार, रामचन्द्र (ई। 1400) की प्रक्रियाकौमुदी, भट्टोजि दीक्षित की सिद्धान्तकौमुदी और नारायण भट्ट (सोलहवीं शताब्दी) का प्रक्रियासर्वस्व उल्लेखनीय हैं। प्रक्रियाकौमुदी पर विट्ठलकृत "प्रसाद" और शेषकृष्णरचित "प्रक्रिया प्रकाश" पठनीय हैं। सिद्धान्तकौमुदी की टीकाओं में प्रौढमनोरमा, तत्वबोधिनी और शब्देन्दुशेखर उल्लेखनीय हैं। प्रौढमनोरमा पर हरि दीक्षित का शब्दरत्न भी प्रसिद्ध है। नागेश भट्ट (ई. 1700) के बाद व्याकरण का इतिहास धूमिल हो जाता है। टीकाग्रंथों पर टीकाएँ मिलती हैं। किसी-किसी में न्यायशैली देख पड़ती है। पाणिनिसम्प्रदाय के पिछले दो सौ वर्ष के प्रसिद्ध टीकाकारों में वैद्यनाथ पायगुंड, विश्वेश्वर, ओरमभट्ट, भैरव मिश्र, राधवेन्द्राचार्य गजेन्द्रगडकर, कृष्णमित्र, नित्यानन्द पर्वतीय एवं जयदेव मिश्र के नाम उल्लेखनीय हैं।

संस्कृत के त्रिमुनि

संस्कृत व्याकरण कि वह तीन विद्वान जिसे त्रिमुनि नाम से जाना जाता है वह है पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि अर्थात् तीन महान विद्वानों पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि को संस्कृत व्याकरण के त्रिमुनि कहा जाता है। इन तीनों का संस्कृत व्याकरण में बहुत बड़ा योगदान है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी, कात्यायन ने वार्तिक तथा पतंजलि ने महाभाष्य की रचना की हैं।

पाणिनि :-

- पाणिनि संस्कृत भाषा के सबसे बड़े वैयाकरण माने जाते हैं। इनका जन्म 500 ईसा पूर्व शालातुर ग्राम (वर्तमान पाकिस्तान के लाहौर) में हुआ था। इनके पिता का नाम पाणिन तथा माता का नाम दाक्षी था। इनको पाणिनि, दाक्षिपुत्र व शालंकी आदि नामों से जाना जाता है। पाणिनि की शिक्षा तक्षशिला विश्वविद्यालय में हुई थी तथा इनके गुरु का नाम उपवर्ष बताया जाता है। कुछ विद्वान इनकी शिक्षा नालंदा विश्वविद्यालय से मानते हैं, किंतु इनके जन्म वर्ष व स्थान को देखते हुए यह सही नहीं लगता है।

मृत्यु- पंचतंत्र के मित्र संप्राप्ति प्रकरण में "सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः" वचन प्राप्त होता है। इस श्लोक के आधार पर यह कल्पना की जाती है कि उनकी मृत्यु सिंह के द्वारा हुई थी। परम्परा के आधार पर यह भी माना जाता है कि उनकी मृत्यु त्रयोदशी को हुई थी।

- पाणिनि की प्रतिभा अनूठी थी। वे संस्कृतभाषा के अद्वितीय विद्वान् थे। वैदिक तथा लौकिक संस्कृतभाषा पर उनका अनुपम अधिकार था।
- पाणिनि की प्रमुख रचनाएं- अष्टाध्यायी,धातुपाठ, गणपाठ उणादिसूत्र, लिंगानुशासन, जंबवती विजय और पाताल विजय।

अष्टाध्यायी :-

- यह ग्रन्थ संस्कृत भाषा का अनुपम रत्न है। विश्व की किसी भाषा में इसके जैसा व्याकरण नहीं बना।इसको अष्टाध्यायी, पाणिनीयाष्टक व शब्दानुशासन नाम से जाना जाता है। इसमें आठ अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय का विभाजन चार-चार पादों में किया गया है अतः कुल 32 पाद हैं। तथा समस्त ग्रन्थ में 14 माहेश्वर सूत्र व 3978 सूत्र हैं। पाणिनि ने इस ग्रन्थ में संस्कृत जैसी विस्तृत भाषा का पूर्णतया विश्लेषण करने का प्रयास किया है। उनकी विवेचना वैज्ञानिक है, शैली संक्षिप्त, सांकेतिक तथा संयत है।

कात्यायन :-

- कात्यायन व्याकरण शास्त्र में वार्तिककार के नाम से प्रसिद्ध है। इनको वररुचि के नाम से भी जाना जाता है। इनका समय 400 ईसा पूर्व में माना जाता है। वे दक्षिण भारत के रहने वाले थे। कात्यायन का भाषा विषयक ज्ञान अगाध था। इनके द्वारा अष्टाध्यायी के लगभग 1500 सूत्रों पर 4000 वार्तिक लिखे गये हैं। कात्यायन मुनि के द्वारा स्वर्गारोहण नामक काव्य भी लिखा गया था।

पतंजलि :-

- त्रिमुनि में पतंजलि ही तीसरे मुनि है तथा सर्वाधिक प्रमाणिक वैयाकरण माने जाते हैं। पतंजलि का समय 200 ई. पू. माना जाता है। पतंजलि ने महाभाष्य ग्रंथ

लोकव्यवहार

पिछले चार हजार वर्षों में संस्कृत का लोक-व्यवहार विभिन्न रूपों में हो रहा है। वैदिक युग तथा वेदाङ्गों के समय तक जनसामान्य में संस्कृत का व्यापक प्रयोग था। यास्क (800 ई.पू.) ने भाषा शब्द का प्रयोग लोकप्रचलित संस्कृत के अर्थ में किया है। पतञ्जलि ने भाषा की प्रवृत्तियों को लोकाश्रय कहा, उसी का विवेचन (अन्वाख्यान) व्याकरण करता है। वाल्मीकि ने शिष्टजनों में परिष्कृत तथा शेषजनों में साधारण संस्कृत के प्रयोग का संकेत किया है। अपने धर्मप्रचार में जैनों ने प्राकृत तथा बौद्धों ने पालि का भले ही प्रयोग आरम्भ किया था, किन्तु ईसवी सन् के प्रारम्भ से दोनों को शास्त्रीय विचार-विमर्श के लिए संस्कृत का आश्रय लेना पड़ा। पाषाणों, ताम्रपत्रों आदि में अंकित अभिलेख (कुछ अपवादों को छोड़कर), संस्कृत में ही हैं। चीनी यात्री हुएनत्सांग (629 ई.- 643 ई. के बीच भारत भ्रमण करने वाला) के अनुसार बौद्ध लोग सामान्य वाद-विवाद में संस्कृत का प्रयोग करते थे। रामायण और महाभारत का सामान्य जनता में पाठ होता था, जो संस्कृत के सर्वजनगम्य होने का प्रमाण है। कश्मीरी कवि बिल्हण कहते हैं कि उनके प्रदेश में स्त्रियाँ भी संस्कृत-प्राकृत दोनों भाषाएँ समझती हैं, दूसरों का क्या कहना?

यत्र स्त्रीणामपि किमपरं मातृभाषावदेव।
प्रत्यावासं विलसति वचः प्राकृतं संस्कृतं च।।

यह भी ज्ञातव्य है कि दिल्ली सल्तनत के समय (1206 ई. - 1526 ई.) भी अनेक संस्कृत अभिलेख किसी लोक-कल्याण-कार्य के स्मारक के रूप में लिखे गए। भारत के दक्षिण-पूर्वी उपनिवेशों (इंडोनेशिया, थाइलैंड इत्यादि) में चौदहवीं शताब्दी ई. तक राजभाषा के रूप में संस्कृत का प्रचलन था। वहाँ के संस्कृत अभिलेख इसे प्रमाणित करते हैं।

ऐसी स्थिति में यह कहा जा सकता है कि आरम्भ में प्रायः ईसवी सन् की कुछ शताब्दियों तक जनसामान्य में संस्कृत भाषा का प्रयोग होता था। कालक्रम से यह शिष्टजनों तक शिक्षा ग्रन्थ-रचना, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ आदि के क्षेत्र में सीमित हो गई। साहित्य-रचना के क्षेत्र में वर्तमान युग तो संस्कृत का वास्तविक स्वर्ण युग है।

ध्यातव्य बिन्दु

- संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है।
- संस्कृत भाषा की रचना-धारा निरन्तर प्रवाहशील है।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' यह उद्घोष संस्कृत भाषा की ही देन है।
- संस्कृत भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से भारोपीय परिवार की भाषा है। ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, रूसी, फ्रांसीसी, स्पेनी आदि यूरोपीय भाषाएँ इसी परिवार की भाषाएँ हैं।
- सभी आधुनिक भारतीय भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं, जैसे–हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, ओड़िया, असमिया, पंजाबी, सिन्धी आदि।
- **आधुनिक भाषाओं की विकास प्रक्रिया इस प्रकार है–**

  (i) प्राचीन आर्य भाषा काल –इस काल में वैदिक भाषा और प्राचीन संस्कृत भाषा के विकास की प्रक्रिया चली।

  (ii) मध्यकालीन आर्य भाषा काल – इस काल में पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ।

  (iii) आधुनिक आर्य भाषा काल – इस काल में विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली अपभ्रंश भाषाओं से आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ।
- **भाषा के रूप - भाषा के दो रूप होते हैं -**

  (i) व्यावहारिक भाषा – बोलचाल की भाषा
  (ii) साहित्यिक भाषा – साहित्य में प्रयुक्त भाषा
- **संस्कृत साहित्य का विकास - साहित्यिक भाषा की दो धाराएँ हैं–**

  (i) वैदिक संस्कृत की धारा
  (ii) लौकिक संस्कृत की धारा
- वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के सन्धिकाल में रामायण तथा महाभारत ग्रन्थों की रचना हुई।
- रामायण तथा महाभारत से ही लौकिक संस्कृत का आरम्भ हुआ। इसी बीच सुप्रसिद्ध विद्वान् पाणिनि का आविर्भाव हुआ जिन्होंने अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ में भाषा-सम्बन्धी नियम बनाए।

➢ **संस्कृत का साहित्यिक विकास चार चरणों में विभक्त है–**

(i) वैदिक साहित्य (6000 ई. पू. से 800 ई. पू.)
(ii) रामायण-महाभारत (800 ई. पू. से 300 ई. पू.)
(iii) मध्यवर्ती संस्कृत साहित्य (300 ई. से 1784 ई.)
(iv) आधुनिक काल (1784 से आज तक)

➢ **वैदिक और लौकिक संस्कृत में भेद–**

- वैदिक – संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्।
- लौकिक – वेद, रामायण, महाभारत, नाटक, काव्य, कथा साहित्य, आयुर्वेद इत्यादि तथा वैज्ञानिक साहित्य।
- संस्कृत भाषा संसार की अत्यन्त प्राचीन भाषा है। इसमें भारतीय सभ्यता और संस्कृति से सम्बद्ध रचनाओं का बहुत बड़ा भण्डार है। इस भाषा में प्राचीन समय से आज तक रचनाएँ होती आ रही हैं। यह भाषा भारोपीय (इंडो-यूरोपियन) परिवार की भाषा है।

- आधुनिक काल में संस्कृत नाटकों के कथानक में विविधता पाई जाती है। महापुरुषों की जीवनी, प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाएँ, राजनीतिक व्यवस्थाएँ, सामाजिक कुरीतियाँ इत्यादि विविध विषयों के कथानक नाटकों में लिए जाते हैं।

ध्यातव्य बिन्दु

- रूपक दृश्य-काव्य का एक नाम है जिसके दस प्रकार हैं। रूपक के दस प्रकारों में नाटक सबसे प्रमुख है।
- आचार्य भरत ने नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक पौराणिक मतों को स्वीकार किया है। भरत मुनि के अनुसार ब्रह्मा ने नाट्य वेद को उत्पन्न किया और शङ्कर तथा पार्वती ने इसे समृद्ध किया।
- टी. गणपति शास्त्री ने भास के तेरह नाटकों की खोज की। जिसका विभाजन चार भागों में किया गया है—

(क) रामायण पर आश्रित— 1. प्रतिमा 2. अभिषेक

(ख) महाभारत पर आश्रित— 1. बालचरित 2. पञ्चरात्र

3. मध्यमव्यायोग 4. दूतवाक्य

5. दूतघटोत्कच 6. कर्णभार

7. ऊरुभंग

(ग) उदयन की कथा पर आश्रित 1. स्वप्नवासवदत्त

2. **प्रतिज्ञायौगन्धरायण**

(घ) कल्पित रूपक 1. अविमारक 2. चारुदत्त

- कालिदास के तीन प्रमुख नाटक हैं— मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय और अभिज्ञानशाकुन्तल
- अश्वघोष के द्वारा रचित शारिपुत्र प्रकरण में शारिपुत्र और मौद्गलायन के द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की कथा है।
- शूद्रक-रचित मृच्छकटिक दस अंकों का सामाजिक रूपक है।
- विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षस सात अंकों का राजनीतिक नाटक है।
- हर्ष ने तीन रूपक लिखे थे, जिसमें दो नाटिकाएँ— प्रियदर्शिका और रत्नावली तथा एक नाटक नागानन्द है।
- भवभूति ने तीन रूपक लिखे हैं, जिनमें महावीरचरित और उत्तररामचरित राम की कथा पर आश्रित नाटक हैं और मालतीमाधव प्रकरण है।
- भट्टनारायण ने वेणीसंहार की रचना की जिसकी विषयवस्तु महाभारत पर आधारित है।
- संस्कृत भाषा में अन्य नाटकों की संख्या हजार से अधिक है।

अध्याय – 13

संस्कृत भाषा – शिक्षण – विधयः

विधाओं के अनुसार शिक्षण विधियाँ

→ **व्याकरण शिक्षण की विधियाँ** → व्याकरण शिक्षण के लिए अनेक प्रकार की विधियों का प्रयोग किया जाता है ! डा. संतोष मित्तल ने इन विधियों को निम्नानुसार दो श्रेणियों में विभाजित किया है –

(क) प्राचीन विधियां → 1. आगमन विधि 2. निगमन विधि 3. सूत्र या केन्द्रीकरण विधि 4. पारायण विधि 5. भाषा संसर्ग या अशाकृति विधि 6. अर्थावबोधन या वाद विवाद विधि 7. अन्वय व्यतिरेक विधि 8. व्याख्या विधि

(ख) अर्वाचीन विधियाँ → 1. आगमन – निगमन विधि 2. समवाय या सहयोग विधि 3. पाठ्यपुस्तक विधि

अन्य विधि → 1. अनोपचारिक विधि या सैनिक विधि

1. आगमन विधि

व्याकरण पढ़ाते समय जब कोई शिक्षक सर्वप्रथम बालकों के समक्ष कुछ विशेष उदाहरण प्रस्तुत करता है, तदुपरान्त इन उदाहरणों की समानता को देखकर छात्रों की सहायता से किसी नियम की स्थापना करता है !पुनः उस नियम की सत्यता को जाचनें के लिए कुछ अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत करता है तो वह आगमन विधि कहलाती है !

परिभाषाएं →

1. 'जायसी' के अनुसार → ' आगमन विशेष दृष्टान्तों की सहायता से सामान्य नियमों को विधिपूर्वक प्राप्त करने की क्रिया है !'
2. 'लेंण्डन' के अनुसार → 'जब कभी बालकों के समक्ष कुछ विशेष तथ्य /वस्तुएं एवम उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं एवम बालकों से स्वंय उनके निष्कर्ष निकलवाये जाते हैं तो वह आगमन विधि कहलाती है !
3. 'युंग / जुंग ' के अनुसार → 'जिस विधि में बालक विविध स्थूल तथ्यों के आधार पर अपनी मानसिक शक्ति का प्रयोग करते हुए स्वंय किसी सामान्यत नियम या सिद्दान्त तक पहुचनें का प्रयास करता है तो वह आगमन विधि कहलाती है !

→ आगमन विधि के प्रमुख पद /चरण /सोपान → इस विधि का प्रयोग करने पर एक शिक्षक को प्रमुखतः निम्न चार चरणों से गुजरना पड़ता है –

1. **उदाहरण प्रस्तुतिकरण** → इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा छात्रों के समक्ष कुछ विशेष उदाहरण किये जाते हैं! ' Walk, Palm, Half, Talk' इत्यादि

2. **'निरिक्षण या तुलना** → इसके अन्तर्गत प्रस्तुत उदाहरणों में किसी विशेष समानता को देखा जाता है! जैसे - उपयुक्त सभी शब्दों का उच्चारण करने पर 'l'की ध्वनि गुप्त (silent)हो !
3. **नियमीकरण या सामान्यीकरण** → इसके अन्तर्गत शिक्षक के द्वारा छात्रों की सहायता से किसी नियम की स्थापना की जाती है ! जैसे :- 'किसी शब्द में 'a+l+k/m/f' प्राप्त होने पर 'l'की ध्वनि लुप्त (silent) हो जाती है !
4. **सत्यापन या पुष्टि** → इसके अन्तर्गत बनाए गये नियम की सत्यता को जानने के लिए कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है ! जैसे :- 'Chalk Palm, Calf 'इत्यादि !

→ **आगमन विधि प्रमुख शिक्षण सूत्र** →
1. उदाहरणत: नियमं प्रति !
2. विशिष्टत सामान्यं प्रति !
3. ज्ञातात अज्ञातं प्रति !
4. स्थुलात सूक्ष्म प्रति !
5. मुर्तात अमुर्तं प्रति !
6. प्रत्यक्षात प्रमाण प्रति !

→ **आगमन विधि के प्रमुख लाभ / गुण** →
1. इस विधि से प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है !
2. इस विधि से बालकों में खोजी प्रवृति का विकास होता है !
3. प्राथमिक स्तर या छोटे बालकों को व्याकरण शिक्षण के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त विधि मानी जाती है!

→ **आगमन विधि के प्रमुख दोष / कमियां** →
1. इस विधि में प्रशिक्षित एवम अनुभवी शिक्षकों की आवश्यकता पड़ती है !
2. यह विधि समय साध्य एवम क्षम साध्य विधि है !
3. उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए यह विधि उपयोगी नहीं मानी जाती है !

2. निगमन विधि

व्याकरण पढ़ाते समय जब कोई शिक्षक सर्वप्रथम बालकों को नियम या सिद्दान्त का ज्ञान करवाता है !तदुपरान्त उदाहरणों पर उस नियम का उपयोग करता है तो निगमन विधि कहलाती है ! इस प्रकार यह विधि आगमन विधि की विपरीत विधि मानी जाती है !

→ निगमन विधि के प्रमुख पद / चरण/ सोपान → निगमन विधि में भी एक शिक्षक को निम्नानुसार चार चरणों से गुजरना पड़ता है यथा -

1. नियम या सिद्दान्त का ज्ञान करवाना → इसके अन्तर्गत शिक्षक सर्वप्रथम छात्रों के समक्ष कोई नियम प्रस्तुत करता है ! जैसे :- 'इ-ई(य) / उ - ऊ(व) /ऋ(र)/लृ(ल)+असवर्ण / असमान स्वर
2. उदाहरणों पर उस नियम का प्रयोग → इसके अन्तर्गत बताये गए नियम को उदाहरणों पर लागू किया जाता है !जैसे :-
   'प्रति + आशा → 'प्रत्याशा
   'गुरु + आज्ञा → गुर्वाज्ञा
   धातु + अंश: → धात्रंश:
   लृ + आकृति: → लाकृति:
3. परीक्षण → उसके अन्तर्गत उदाहरणों में बताये गए नियम की जाँच की जाती है ! जैसे :- उपयुक्त उदाहरणों में 'इ/उ/ऋ/लृ' को क्रमशः 'य/त/र/ल' में बदला गया है !
4. सत्यापन या पुष्टि → इसके अन्तर्गत बताये गए नियम की सत्यता को जाचने के लिए कुछ अन्य उदाहरण प्रस्तुत किये जाते है ! जैसे:- देवी + अपर्णम → देव्यर्पणम
   मधु + आचार्य: → मध्वाचार्य:
   पितृ + उपदेश: → पित्रुपदेश:
   लृ + आकर : → लाकार:

→ **निगमन विधि के प्रमुख शिक्षण सत्र** →
1. 'नियमात उदाहरण प्रति !
2. सामान्यत ज्ञातं प्रति !
3. अज्ञातात ज्ञातं प्रति !
4. सूक्ष्मात स्थूलं प्रति !
5. अमुर्तात मूर्तं प्रति !
6. प्रमाणात प्रत्यक्षं प्रति !

→ **निगमन विधि के प्रमुख लाभ / गुण** →
1. 'इस विधि के प्रयोग से एक साधारण शिक्षक भी सफलता पूर्वक व्याकरण पढ़ा सकता है !'
2. 'इस विधि के प्रयोग से शिक्षक के समय एवम श्रम की बचत होती है !'
3. 'उच्च स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त 'विधि मानी जाती है!

→ **निगमन विधि के प्रमुख दोष /कमियाँ** →
1. 'इस विधि से प्राप्त ज्ञान अस्थायी होता है!
2. इस विधि के प्रयोग से बालकों में रहने की प्रवृति का विकास होता है !
3. प्राथमिक स्तर पर व्याकरण शिक्षण के लिए यह विधि उपयुक्त नहीं मानी जाती है!

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- सृजनात्मकशक्तेः अभिव्यक्तिः च वर्धनार्थम्
- सृजनात्मक शक्ति के विकास में तथा अभिव्यक्ति को बढ़ाने में भी पठन कौशल महत्त्वपूर्ण हैं।
- सद्वृत्तीनां विकासाय :- अच्छे संस्कारो या चरित्र का विकास करकने में भी पठन कौशल आवश्यक हैं।

पठनस्य प्रकाराः (पठन के प्रकार)

- पठन दो प्रकार से हो सकते हैं –
  (i) सस्वर पठनम्
  (ii) मौनपठनम्

पठन

सस्वर वाचनम् — वैयक्तिकम्, सामूहिक

मौनवाचनम् — गम्भीरपठनम्, द्रुतपठनम्

सस्वर वाचनम् :

❖ पाठकानां संख्या दृष्ट्या (पढ़ने की दृष्टि से)

1. **व्यक्तिगतपठनम् :-**
2. **सामुहिकपठनम्** :- सस्वर वाचन के अन्तर्गत सामुहिक पठन व्यक्तिगत पठन से अच्छा माना जाता हैं इसके द्वारा छात्र अपनी झिझक को दूर कर सकता हैं।

❖ **अभिव्यक्तेः दृष्ट्या (अभिव्यक्ति दृष्टि से) :-**

(i) **आदर्शपठनम्** – आदर्श पठन शिक्षक के द्वारा किया जाता हैं।

(ii) **अनुकरण** – पठनम् – अनुकरण पठन छात्रा के द्वारा किया जाता हैं।

(iii) **अनुपठनम्** – अनुपठन यानि पश्चात् पठन यानि बाद में किसी भी समय पढ़ सकते हैं।

❖ **मोनवाचनम् :-**

❖ **गम्भीरपठनम्** :- गंभीर अध्ययन यानि गहन अध्ययन जब चीजो को गहनता से पढ़ते हैं।

❖ **द्रुतपठनम** :- द्रुत पठन में Speed से मन ही मन में पढ़ते हैं।

❖ पठनकौशलम् विधयः

- वर्णोच्चारणविधिः
- चित्राविधिः
- अनुकरणविधिः
- ध्वनिसाम्यविधिः

- **स्मवायपठनविधि** :- समवायपठन विधि से तात्पर्य सामुहिक पठन विधि से हैं।

❖ **भाषायन्त्रविधि** :- भाषायंत्रविधि में जिन बच्चों की भाषा बहुत कम विकसित हैं उन्हें भाषा प्रयोगशाला में ले जाकर बच्चों को बार-बार Practice कराया जाता हैं।

❖ वाक्यसंरचनाविधि

4. लेखनकौशलम् (लिखना)

- भाषायाः ध्वन्यात्मकरूपस्य लिपिबद्ध करणमेव लेखनम् (भाषा के ध्वनि के रूप का लिपिबद्ध करना ही लेखन कहलाता हैं।)
- प्रमुख – उद्देश्यम् – सुन्दरलेखनस्य प्रतिरूपप्रस्तुतिः (लेखन कौशल का प्रमुख उद्देश्य सुन्दर लेख का आदर्श प्रस्तुत करना हैं।)

❖ **अन्यानि उद्देशय् (लेखन कौशल के अन्य उद्देश्य) :-**

- **विचाराणां स्थायीकरणम्** :- विचारो को स्थायी करने का आधार होता हैं लेखन कोई भी लेखक या व्यक्ति अपने विचारो या कविताओं को लिख रहा हैं तो वो अपने विचारो और भावो को कहीं न कहीं स्थिर कर रहा हैं।
- **सृजनात्मकशक्तेः विकासः** :- सृजनात्मक शक्ति का विकास करना भी लेखन कौशल का उद्देश्य हैं।
- **भाषायां पूर्वाधिकारप्राप्ति** :- भाषा में पूर्ण अधिकार प्राप्त करना लेखन कौशल के उद्देश्य होते हैं।
- विचारेषु भावेषु च नूतनप्रतिमानस्थापना :- विचारो एवं भावो में नए प्रतिमान की स्थापना करना लेखन का उद्देश्य हैं।

❖ **लेखनकौशलम् महत्त्वानि (लेखन कौशल के महत्त्व) :-**

- **श्रृंखलाबद्धलेखनाय** :- श्रृंखलाबद्ध रूप से लिखने में इसका महत्त्व हैं।
- **श्रुतलेखनस्य अभ्यासाय** :- श्रुत लेख यानि सुनकर लिखना इससे वर्तनी की अशुद्धिया कम होती हैं।

❖ **लिखितकार्ये समस्यया :-**

- **वर्तनीसम्बद्ध** :- वर्तनी से सबंधित समस्या होती हैं लिखित कार्य में
- **व्याकरणसम्बद्ध** :- व्याकरण से संबंधित समस्याएँ

❖ **लेखनकौशलम् विधयः**

- **अनुलेखः (दृष्टिलेखः)** :- अनुलेख विधि के अन्तर्गत जैसा शिक्षक कहेंगे और छात्र उसका अनुकरण करेंगे फिर उसका आंकलन किया जायेगा।
- **प्रतिलेखः विधयः** :- इसमें शिक्षक श्यामपट्ट पर कुछ लिखते हैं और छात्र उनकी नकल करते हैं।
- **श्रुतिलेखः** :- सुन कर के लिखना इस विधि से वर्तनी संबंधी अशुद्धिया कम की जाती हैं। यह छोटी बच्चो के लिए उपयुक्त हैं।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp - https://wa.link/ny6pbb 1 web.- https://shorturl.at/iiVK0

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO